राष्ट्रीय एकता के मार्ग में मुख्य बाधाएं

शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की बाधाओं को दूर करने के उपाय

राष्ट्रीय एकता अथवा भावात्मक एकता के मार्ग में मुख्य बाधाएं इस प्रकार है-

(1) विभिन्न जातियाँ- वर्ण व्यवस्था, व्यवसाय और धर्म के आधार पर हमारे देश में अनेक जातियाँ पाई जाती हैं जैसे-ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, तेली, धोबी, लुहार, दर्जी आदि। इन जातियों के रहन-सहन और रीति-रिवाज में बड़ा अन्तर है जो राष्ट्रीय एकता में एक बड़ी रुकावट है।

(2) धार्मिक विभिन्नता- हमारे देश में अनेक धर्म जैसे-हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी आदि हैं। इन धर्मों में बाह्य रूप से बड़ी भिन्नताएँ हैं। किसी में मूर्ति पूजा की जाती है, किसी में नहीं। धर्मान्धता भावात्मक एकता में बाधक है। भावात्मक अनेकता से सांप्रदायिक दंगे होते हैं जिससे राष्ट्रीय एकता में बाधा पड़ती है।

(3) विभिन्न भाषाएँ- मनुष्य एक दूसरे के सम्पर्क में भाषा के माध्यम से आता है। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। हिन्दी को राष्ट्र भाषा माना गया है किन्तु अंग्रेजी बोलने का मोह समाप्त नहीं हुआ है। अहिन्दी भाषा-भाषी हिन्दी की उन्नति पर बाधा डालते हैं। इससे भावात्मक एकता पर आघात होता है।

(4) आर्थिक विषमता- भावात्मक एकता की प्राप्ति में सबसे बड़ा तत्व आर्थिक विषमता है। उच्च वर्ग आर्थिक शोषण करता है। निम्न वर्ग उससे घृणा करते हैं। मध्यम वर्ग भी इन्हीं

बातों से पिस जाता है। उस आये दिन चन्दा और करों का बोझ होता है जिससे एकता में बाधा पहुँचती है।

(5) सामाजिक विषमता- जाति के नाम पर ऊँच-नीच, अर्थ के नाम पर ऊँच-नीच, व्यवसाय के नाम पर ऊँच-नीच जिधर देखो उधर दो वर्ग हैं। विपत्ति आने पर हम सब एक हो जाते हैं और स्वार्थ सिद्ध होने के बाद फिर अलग-अलग हो जाते हैं। यह स्थिति एकता के लिए घातक होती है।

(6) संकीर्ण राजनैतिक दृष्टिकोण- हमारा देश अनेक प्रान्तों में बँटा है। ये राज्य उसके अंग है। आज क्षेत्रवाद ने भारतीय एकता पर कुठाराघात किया है। पंजाब में खालिस्तान की मांग क्षेत्रवाद की दृष्टि से उठी और इसमें संकीर्ण राजनैतिक दृष्टिकोण पूर्णतः जिम्मेदार हैं। यह स्थिति भी राष्ट्रीय एकता में बाधक है।

शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की बाधाओं को दूर करने के उपाय-

राष्ट्रीय एकता अथवा भावात्मक एकता की बाधाओं को शिक्षा द्वारा निम्नलिखित कार्यों से दूर किया जा सकता है-

(1) विद्यालयों की पाठ्यचर्या में परिवर्तन किया जाए और उसे देश की वर्तमान स्थिति एवं उनकी आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया जाये।

(2) पाठ्य पुस्तकों में आवश्यक संशोधन किये जाएँ और उनकी सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाये कि वे भावात्मक एकता के विकास में सहायक हों।

(3) पाठ्यचर्या में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीयमहत्व की पाठ्यचारी क्रियाओं को विशेष रूप से स्थान दिया जाये। वर्ष में कम से कम चार बार राष्ट्रीय भावना पर नाटक खेले जाने चाहिए।

(4) विश्वविद्यालयो स्तर पर विभिन्न सामाजिक विज्ञान, भाषाएं, साहित्य, संस्कृति और कला के अध्ययन की व्यवस्था की जाये।

(5) प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या में कहानी, कविता और राष्ट्रीय गीतों को स्थान दिया जाये और सभी स्तरों पर सामाजिक विषयों के अध्ययन पर बल दिया जाये।

(6) विद्यालयों का कार्य दैनिक एसेम्बली एवं प्रार्थनाओं से प्रारम्भ किया जाये और इस समय दस मिनट नैतिक शिक्षा अथवा राष्ट्रीय महत्व की चर्चा के लिए दिये जायें । वर्ष में दो बार सभी छात्र देश हित के लिए संकल्प को दोहराएं और देश सेवा की शपथ लें।

(7) विद्यार्थियों में राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्र-भाषा के प्रति स्थाई भाव बनाया जाये और उन्हें उनका सम्मान करने को प्रेरित किया जाये।

(8) एक विद्यालय के छात्रों का एक निश्चित ड्रेस हो जिससे जाति, धर्म और अर्थ के आधार पर व्याप्त भिन्नता समाप्त हो और वे अपने आपको विद्यालय के समान स्तर के सदस्य मझें।

(9) अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी को लोकप्रिय बनाया जाये और इसके लिए हिन्दी पुस्तकें क्षेत्रीय लिपियों में तैयार की जायें और समस्त भारतवर्ष में अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग किया जाये।

(10) छात्रों को देश-भ्रमण और अन्तर संस्कृति विकास के अवसर दिये जायें।

(11) शिक्षकों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर अन्य नगरों से ट्रांसफर किया जाये जिससे उनका ध्यान अपने अध्यापन कार्य और छात्रों के हित की ओर केन्द्रत हो जाये।

(12) प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक और माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए समान देश में समान वेतन की व्यवस्था की जाये।

(13) विद्यालयों में राष्ट्रीय पर्वों, 26 जनवरी, 15 अगस्त और 2 अक्टूबर को बड़ी श्रद्धा और उत्साह से मनाया जाये।

(14) युवक कार्यक्रमों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए अखिल भारतीय युवक समिति की स्थापना की जाये।

(15) विद्यालयों में समय-समय पर भावात्मक एकता पर भाषणों का आयोजन किया जाये।

(16) विश्वविद्यालयों में आपस में शिक्षकों का आदान-प्रदान किया जावे।

शिक्षाशस्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें
- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष
- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi
- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi

- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष
- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन
- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां
- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व
- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम
- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा
- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख

- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi
- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन

sarkariguider.com

sarkariguider.com